चोरतोर नंगतनवाय

(हल्बी)

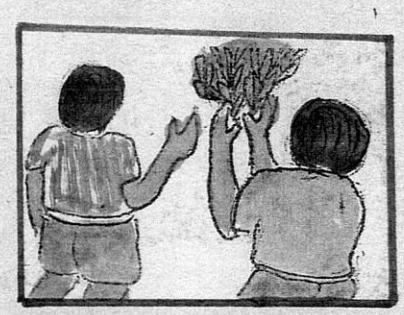

गोटोक दिन चो गोठ
आय । कमलू आउर
हड़मा भाटा ने खेलते
रहोत ।

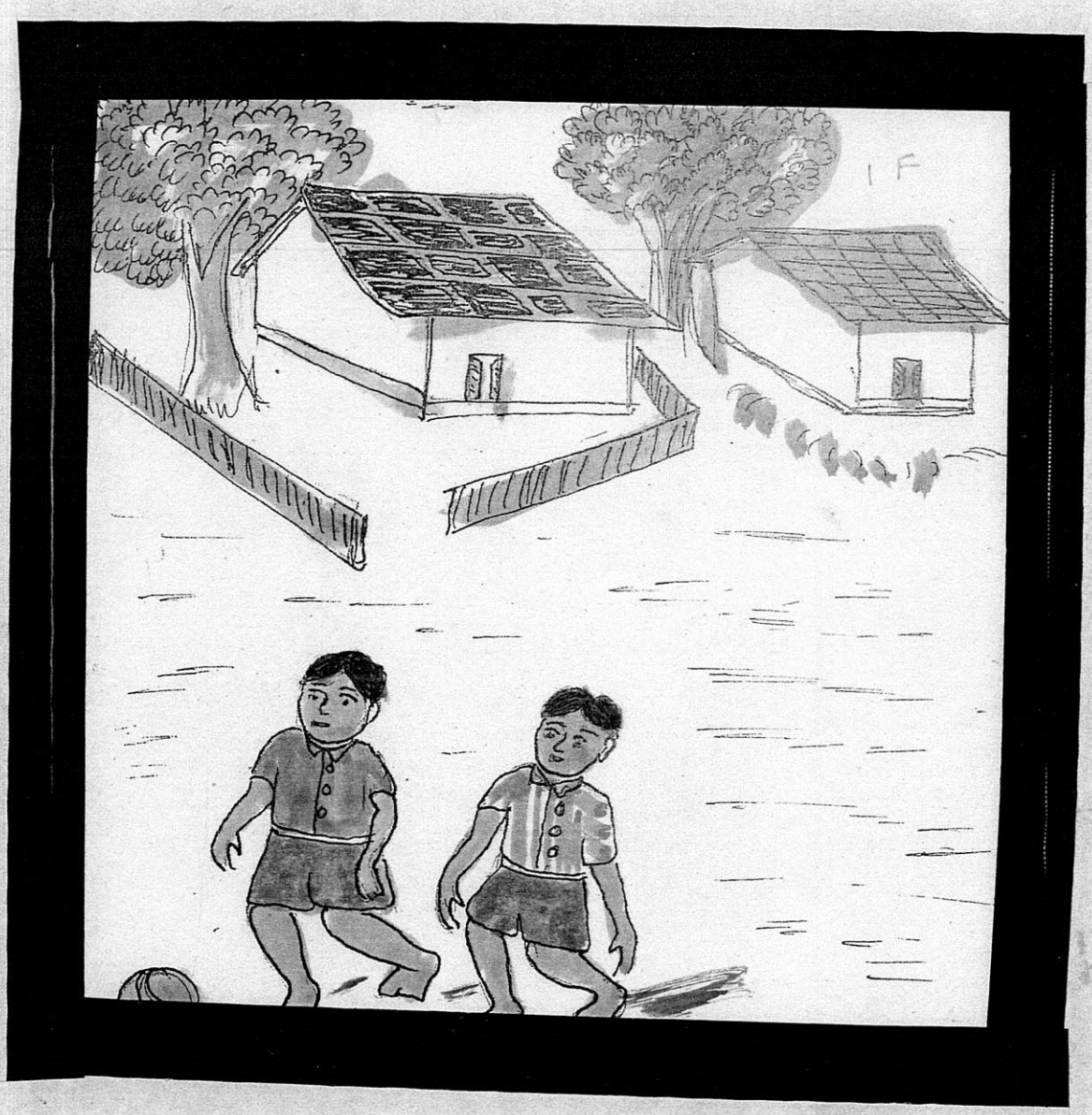
1 F

उने लगे डोरकासौकार
चोबाड़ी ने कांदुल
फेरु रये। तेबे कमलू
आउर हड़मा के भूस
लागली। भूस लागली
गूने डोरका सौकार
चोबाड़ी ने कांदुल
चोरुक ओलला।

उदलीदाय डोरका
सौकार चोरतो के
दखलो आउर दुनो
के दरलो।

रेदांय तो धारले ! काय काजे कांदुल चोरेसास ! कमनू
सोकार-भूख लागली मूने । कांदूल चोरूक ओलनू ।

कांदुल टुटान दिलो
आऊर बललो. बेटा
चोरतोर नंगत गोठ
नुआय। उनी दिन ले
दुनो लेका कान धरुन
बलला. आजी ले
केबयी नी चोरुं।

कमलू आऊर हड़मा
देखा बाबू चोर तोर
नगत गोठ नुआय।
चोर बलुआत।
सौकार आमो कान धरंन से
आजी ले ऐबयी नी चोरंन।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद - रायपुर (छ.ग.)

कार्यक्रम समन्वयक - विद्या डांगे - SCERT रायपुर

सहायक समन्वयक - भरत साव - डाईट - धमतरी

मूल कथा - (i) मंगलूराम नाग (iii) सुखलाल नाग

(ii) सोनाधर नाग (iv) लव कुमार बघेल

भाषा - हल्बी.

शब्दार्थ

गोटोक दिने = एक दिन

भाटा = मैदान

भाड़ी = खेत

कांदुल = राहल

उनी लगे = वहीं पास

उदलीदाय = उसी समय

गोठ = बात

चोरतोर नंगत नवाय = चोरी करना. ठीक नहीं

टुटान दिलो = तोड़ दिया

धरुन = पकड़कर

चोरुक ओलला = चुराने घुसे.